











# संपादकीय

## भेदभाव के खिलाफ़

**सं** घ प्रमुख मोहन भागवत का 'एक मंदिर, एक कुआं और एक शमशान' की अपील करना बताता है कि हिंदू समाज में जाति का दंश अब भी किनारा गहरा है। जातीय पहचान को सम्मान से जोड़ कर देखा जाता है और इसकी बजाह से बदलाव बहुत थीमी है। ऐसे में भागवत का बवाना स्वगतयोग्य है।

**दलितों पर अत्याचार :** सामाजिक रुद्धियों के अलावा राजनीतिक वजहों ने भी देश में जाति को कभी मरने नहीं दिया। यही बजह है कि आज भी दलित दूहे का घोड़ी चढ़ कर जाना कई लोगों को रास नहीं आता। आगरा की एक घटाना सामने है, जहां अपेक्षा है कि दलित दूहे को पीटा गया। पिछले साल एमपी के दमोह में बवाह पर बैठने पर दलित दूल्हे के साथ मारपीट की गयी थी। यहां तक कि मंदिर भी भेदभाव से अछूते नहीं। पिछले ही महीने पश्चिम बंगाल के गिरावग्राम रिश्ते एक शिव मंदिर में दलितों को संदियों बांधा गया था, तो तमाम लोग नाराज हो गये।

**हजारों शिकायतें :** सबसे बड़ी समस्या है कि देश में जाति से जुड़े भेदभावों को एक बड़ा तबका अब भी गलत नहीं मानता। उसकी नजर में यह स्वाभाविक व्यवहार है। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने पिछले साल अक्टूबर में एक आरटीआई के तहत पूछे गये सवाल के जवाब में बताया था कि चार साल के भीतर उसके पास 47 हजार से ज्यादा

शिकायतें दर्ज हुईं। इनमें दलितों के खिलाफ़ अत्याचार, भूमि विवाद और सरकारी नौकरियों से संबंधित मुद्दे प्रमुख हैं।

**सकारात्मक पहल :** इस तरह की घटानाएं जारी करती हैं कि समसरता का सपना अभी दूर है। इन

भागवत ने कहा है कि शांति और समृद्धि के मामले में दुनिया भारत की तरफ देख रही है। स्वयंसेवकों को हर दूर में एकता और भाईयाएं की भावना जगाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। समाज खुद नहीं बदल सकता। वाकई ऐसा ही है, जातियों के खांचों को तोड़ने और समाज को बदलने के लिए लगातार एवं सामूहिक प्रयास की जरूरत है।

**सामूहिक प्रयास की जरूरत :** भागवत ने कहा है कि शांति और समृद्धि के मामले में दुनिया भारत की तरफ देख रही है। स्वयंसेवकों को हर दूर में एकता और भाईयाएं की भावना जगाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। समाज खुद नहीं बदल सकता। वाकई ऐसा ही है, जातियों के खांचों को तोड़ने और समाज को बदलने के लिए लगातार एवं सामूहिक प्रयास की जरूरत है।

**सामूहिक प्रयास की जरूरत :** भागवत ने कहा है कि शांति और समृद्धि के मामले में दुनिया भारत की तरफ देख रही है। स्वयंसेवकों को हर दूर में एकता और भाईयाएं की भावना जगाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। समाज खुद नहीं बदल सकता। वाकई ऐसा ही है, जातियों के खांचों को तोड़ने और समाज को बदलने के लिए लगातार एवं सामूहिक प्रयास की जरूरत है।

इसमें किसी तरह के राजनीतिक या वैचारिक मतभेद को आड़े नहीं आने देना चाहिए। भारत इस समय दुनिया में एक नया मुकाम हासिल करने की तरफ बढ़ रहा है, लेकिन यह तभी संभव है कि जब जातियों के नाम पर एक-दूसरे से लड़ने के बजाय मिल कर काम किया जाये।

## अभिमत आजाद सिपाही

दिल्ली में 30 हजारी अदालत में वर्षों से झूटे मामले में सजा कार रहे एक व्यक्ति को बरी करने का फैसला व्यायामूर्ति अंतिक्षण सेशन जज अगवाल ने हाल ही में दिया और कहा कि बलाकार जैसा बिनोना आपेक्षा लगाने वाली महिला के विषय कार्यवाही है। यह महिला उस व्यक्ति को बहुत समय से लैकर कर रही थी। उसने कई बार धमकी दी थी कि अगर उसकी मांग एक नहीं दी गयी तो वह उसे दें। जब उसकी धमकियों का असर होता दिखायी नहीं दिया, तो उसने झूटा आपेक्षा लगा कर पुलिस थाने में शिकायत की और मिलाइगत से उसे बिरामित कराया।

# महिलाओं के पक्ष में बने कानूनों की समीक्षा आवश्यक

## पूरन चंद सरीन

कानून कोई भी हो, उसके उपयोग, सदुपयोग और दुरुपयोग की संभावनाएं बनने रहती हैं। समय-समय पर उनकी समीक्षा और अवश्यकतानुसार परिवर्तन आवश्यक है, क्योंकि हमारा विधि समाज, वकील से लेकर न्यायाधीश तक, कोई न कोई सुराख तलाश ही लेते हैं, जिससे अदलतों प्रक्रिया प्रभावित हो जाती है। अपराधी बच जाता है और निर्दोष सजा भुगता है। न्याय के प्रति अवश्यक प्रयत्न लगता है जो पूरे ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने के लिए पर्याप्त है।

**न्यायिक व्यवस्था में आस्था नहीं रहती :** अदलतों द्वारा इस तरह के निर्णय, जिनमें जघन्य अपराध के लिए लंबी सजा काटने के बाद पाया जाता है कि अभियुक्त निर्दोष था, हमारी कानून व्यवस्था के दोषी होने का सकेत है। इस दौरान उसके साथ जो हुआ, जो उसने सहा, उसके लिए जिम्मेदार अपराधी को देख रखा है।

**सकारात्मक पहल :** इस तरह की घटानाएं जारी करती हैं कि समसरता का सपना अभी दूर है। इन

एक उदाहरण है; दिल्ली में 30

हजारी अदालत में वर्षों से झूटे मामले

में सजा काट रहे एक व्यक्ति को बरी

करने का फैसला व्यायामूर्ति

अंतिरिक्ष सेशन जज

अग्रवाल ने हाल ही में

दिया और कहा कि

बलाकार जैसा बिनोना

आरोप लगाने वाली

महिला के विरुद्ध

कार्रवाई है। यह महिला

उस व्यक्ति को बहुत समय

से ब्लैकमेन कर रही थी।

उसने कई बार धमकी दी थी कि

अगर उसकी मांगी रकम उसे नहीं दी

गयी तो वह उसे रेप के मामले में फंसा

कर उसकी जिंदगी तबाह कर देगी। जब

उसकी धमकियों का असर होता होता

दिखायी नहीं दिया, तो उसने झूटा

देकर, लाचारी, बेरोजगारी का वास्तव देकर,

सबसे पहले विभिन्न प्रावधानों की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए, ताकि उनका कोई नी पक्ष विपरीत अर्थ न निकाल सके। अग्री जो कानून है, उसने इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए क्या किया जाये :

सबसे पहले विभिन्न प्रावधानों की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए, कि उनका अपराधी को आरोपित करने की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि एक धारा के अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं, जैसे पीड़ित केवल महिला हो सकती है, पुरुष और समझौते की बात करती है।

समीक्षा के लिए जिम्मेदारी जारी रखना चाहिए। अभी जो कानून है, उसमें इतनी विसंगतियां हैं

# मेराल की छाया को सिविल सेवा परीक्षा में 530वां स्थान

इससे पहले जिले के हूंगांव की नगरा चौबी ने सिविल सेवा परीक्षा 2021 में 73वां स्थान प्राप्त किया था, वहीं सहिनजना के शिरेवु शिवम ने यूपीएससी 2023 में 83वां स्थान हासिल किया था।

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल/गढ़वा। गढ़वा जिला स्थित मेराल प्रखंड के अकलवानी गांव की बेटी छाया कुमारी ने यूपीएससी की मेन परीक्षा में 530वां स्थान लाकर गांव समाज के साथ-साथ गांव और पूरा गढ़वा जिलावासी काफी खुश हैं। उसके इस उपलब्धि पर उक्त बादावी, ममी-पापा के साथ-साथ गांव और पूरा गढ़वा जिलावासी काफी खुश हैं। उसके सफलता पर सोशल मीडिया पर सुनील दुबे हैं। बता दें कि इससे पहले जिले के हूंगांव की चूमारी पहले बीपीएससी और अब यूपीएससी की परीक्षा में 530वां स्थान लाकर गांव समाज के साथ जिले का नाम रोशन की है। सुनील दुबे की पुरी छाया कुमारी ने यूपीएससी की परीक्षा में सफलता हासिल की है। उसके बाद एक बादावी छाया को खुश है। उसके सफलता पर सोशल मीडिया पर काफी लोग शुभकामनाएं दे रहे हैं। छाया अभी दिल्ली में है। बता दें कि इससे पहले जिले के हूंगांव की नवता चौबी सिविल सेवा परीक्षा 2021 में 73वां स्थान प्राप्त की थी। बहीं गढ़वा शहर के परिवार समाज के साथ-साथ जिले के लागं गौरांचत्वं महसूस कर रहे हैं। क्वोंकि ज्ञानखंड का सबसे पिछड़ा जिला कहलाने वाला गढ़वा के गांव की एक और बेटी ने आईएसस बनने का सपना पूरा

किया है। साधारण परिवार की छाया कुमारी ने बेसिक पढ़ाई गढ़वा के शांत निवास स्कूल से की है। फिलहाल वह दिल्ली में रहकर यूपीएससी की तैयारी कर रही थी। 2024 के यूपीएससी परीक्षा में छाया ने सफलता हासिल कर मिसाल कामय की है। उसके

पिता सुनील दुबे ने बताया कि छाया को खुशी के बाद एक बादावी, ममी-पापा के साथ-साथ गांव और पूरा गढ़वा जिलावासी काफी खुश हैं। उसके

पिता सुनील दुबे एक मामूली किसान तथा गृहणी माता सीमा देवी की सीनी जहां गवर्नर से भर गया है। वहीं अपनी बेटी का दास्तान

विधायक ने प्रखंड मुख्यालय का औचक निरीक्षण किया पदाधिकारियों को शिकायत पेटी लगाने का दिया निरेश



भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। विधायक अनंत प्रताप देव ने मंगलवार को प्रखंड मुख्यालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में उन्होंने बीड़ीओं नंदिया राम और सीओ शंख राम से कहा कि प्रखंड और अंचल नियन्त्रित में दूर दराज क्षेत्रों से अपने कार्यों के लिए पहुंचने वाले लोगों को बेज़ह दोषाया नहीं जायें। उनकी समस्याओं की जांच कर उन्हें अवलिंग समाधान किया जाये। कहा गया कि सरकार द्वारा संचालित जनहित योजनाओं में अगर प्रखंड और अंचल कर्मी द्वारा पैसा लेने की शिकायत मिलती है, तो उनके ऊपर खुद कारबोइंग करना चाहिए। विधायक के नियन्त्रण के प्रखंड और अंचल कार्यालय में शिकायत पेटी लगाने का दिए देश दिया। इस भौंक पर अमरनाथ पांडे, यूपीएससी अध्यक्ष ब्रजेश सिंह, गोपाल उराव, मनोज यादव आदि उपस्थित थे।

**समेकित बाल विकास परियोजना रंका के अनुसरक ने की आत्महत्या, शोक**

रंका (आजाद सिपाही)। रंका समेकित बाल विकास परियोजना रंका में अनुसरक पद पर कार्यरत गोपाल ठाकुर ने सोमवार के संवेद्य बोला में किट्टनाशक जहरिला पदार्थ खाकर आत्म हत्या कर ली। गोपाल ठाकुर रंका थाना क्षेत्र के कंचनपुर गांव के निवासी थे। आत्म हत्या करने के पीछे क्या कराना रहा है? उसका स्पष्ट पता नहीं चल पाया है। शब का अंत्यक्षिणी के पश्चात रंका-कंचनपुर घाट पर दांत संस्कार कर दिया गया। गोपाल ठाकुर एक व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। परिवार जन्मों का रो-रो कर रुग्न हाल है। पूरे गांव टोले में शोक त्यास है।

**कौशल विकास मिशन की प्रदेश स्तरीय टीम ने कौशल प्रशिक्षण केंद्रों का किया औचक निरीक्षण**



गढ़वा (आजाद सिपाही)। झारखंड कौशल विकास मिशन सोसाइटी की प्रदेश स्तरीय टीम द्वारा गढ़वा जिले में संचालित कौशल प्रशिक्षण केंद्रों का औचक निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षण अधिकारी के दोरान झारखंड कौशल विकास सोसाइटी के प्रधानक विश्वरप ठाकुर और अग्रिम प्रजापति ने निरीक्षण के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के समर्पण अभियांत्रों की जांच की गयी, साथ ही पंजीकृत लाभार्थियों तथा नये बैच के लाभार्थियों को अंतिम परिणाम अर्थात् शत प्रतिशत सफल नियोजन दर को सुनिश्चित किए जाने हेतु सुझाव दिया। निरीक्षण के दोरान जिला कौशल पदाधिकारी और परियोजना सहायक सहित अन्य उपस्थित थे।

एसडीओ ने महाविद्यालयों में स्नातक परीक्षाओं का किया निरीक्षण

परीक्षार्थियों को परेशान देख नीके पर बिजली आपूर्ति शुल्क दर्शाएं, छात्र बोले थैकू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय से संबंध गढ़वा के महाविद्यालयों में मंगलवार से आरंभ हुई थी, बीपीएससी, बीकॉम की सेमेस्टर परीक्षाओं के क्रम में विधि व्यवस्था जांच हुई थी। उल्लेखनीय है कि द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रथम द्वारा के दोरान मार्गदर्शक तथा अधिकारी ने नामधारी कॉलेज, सुरत पांडे डिग्री एवं पीपीटी यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के अंतिम परीक्षण के दौरान विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के समर्पण अभियांत्रों की जांच की गयी। जिसमें सप्ताही ने अधिकारी किया कि पृथ्वी दिवस पहली बार सन 1970 में एक ओटे से पर्यावरण के लिए विद्यालय में लगाया गया था।

परीक्षार्थियों को परेशान देख नीके पर बिजली आपूर्ति शुल्क दर्शाएं, छात्र बोले थैकू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय से संबंध गढ़वा के महाविद्यालयों में मंगलवार से आरंभ हुई थी, बीपीएससी, बीकॉम की सेमेस्टर परीक्षाओं के क्रम में विधि व्यवस्था जांच हुई थी। उल्लेखनीय है कि द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रथम द्वारा के दोरान मार्गदर्शक तथा अधिकारी ने नामधारी कॉलेज, सुरत पांडे डिग्री एवं पीपीटी यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के समर्पण अभियांत्रों की जांच की गयी। जिसमें सप्ताही ने अधिकारी किया कि पृथ्वी दिवस पहली बार सन 1970 में एक ओटे से पर्यावरण के लिए विद्यालय में लगाया गया था।

परीक्षार्थियों को परेशान देख नीके पर बिजली आपूर्ति शुल्क दर्शाएं, छात्र बोले थैकू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय से संबंध गढ़वा के महाविद्यालयों में मंगलवार से आरंभ हुई थी, बीपीएससी, बीकॉम की सेमेस्टर परीक्षाओं के क्रम में विधि व्यवस्था जांच हुई थी। उल्लेखनीय है कि द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रथम द्वारा के दोरान मार्गदर्शक तथा अधिकारी ने नामधारी कॉलेज, सुरत पांडे डिग्री एवं पीपीटी यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के समर्पण अभियांत्रों की जांच की गयी। जिसमें सप्ताही ने अधिकारी किया कि पृथ्वी दिवस पहली बार सन 1970 में एक ओटे से पर्यावरण के लिए विद्यालय में लगाया गया था।

परीक्षार्थियों को परेशान देख नीके पर बिजली आपूर्ति शुल्क दर्शाएं, छात्र बोले थैकू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय से संबंध गढ़वा के महाविद्यालयों में मंगलवार से आरंभ हुई थी, बीपीएससी, बीकॉम की सेमेस्टर परीक्षाओं के क्रम में विधि व्यवस्था जांच हुई थी। उल्लेखनीय है कि द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रथम द्वारा के दोरान मार्गदर्शक तथा अधिकारी ने नामधारी कॉलेज, सुरत पांडे डिग्री एवं पीपीटी यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द्वारा प्रशिक्षण केंद्रों के समर्पण अभियांत्रों की जांच की गयी। जिसमें सप्ताही ने अधिकारी किया कि पृथ्वी दिवस पहली बार सन 1970 में एक ओटे से पर्यावरण के लिए विद्यालय में लगाया गया था।

परीक्षार्थियों को परेशान देख नीके पर बिजली आपूर्ति शुल्क दर्शाएं, छात्र बोले थैकू

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय से संबंध गढ़वा के महाविद्यालयों में मंगलवार से आरंभ हुई थी, बीपीएससी, बीकॉम की सेमेस्टर परीक्षाओं के क्रम में विधि व्यवस्था जांच हुई थी। उल्लेखनीय है कि द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं प्रथम द्वारा के दोरान मार्गदर्शक तथा अधिकारी ने नामधारी कॉलेज, सुरत पांडे डिग्री एवं पीपीटी यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दोरान प्रधानक विश्वरप ठाकुर के द









